तूने हीरो सो जनम गमायो .....

तूने हीरो सो जनम गमायो, भजन बिना बावरे।
ना तू आयो सन्तां शरणे, ना तू हरि गुण गायो।।
पचि–पचि मर्‌यो बैल की नाईं, सोय रह्‌यो रे उठ खायो।
भजन बिना बावरा ....
ओ संसार हाट बनिये की, सब जग सौदे आयो,
चातुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गमायो।
भजन बिना बावरा ....
ओ संसार फूल सेमर को, सुवो देख लुभाया,
मारी चोंच निकल गइ रूई, सिर धुन–धुन पछितायो।
भजन बिना बावरा ....
ओ संसार माया रो लोभी, ममता महल चिनायो,
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हाथ कछू नहीं आयो।
भजन बिना बावरा ....

माया दोय प्रकार की, जो कोय जाने खाय।
एक मिलावे राम को, एक नरक ले जाय।।